भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए XX (बीसवाँ) साप्ताहिक परामर्श, 3 ओक्टोबर से 9 ओक्टोबर, 2023 तक

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा(मिमी)					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर/ ओक्टोबर					ओक्टोबर				
		29	30	01	02	03	05	06	07	08	09
	हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	जींद	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	सिरसा						0	0	0	0	0
	रोहतक	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी	64.5 to 115.5 मिमी			115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा	भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में, 133 से 170 दिन के पश्चात फसल बीजकोष के विकास से लेकर बीजकोष खुलने की अवस्था में है। दूसरी चुनाई प्रगति पर है । कुछ खेतों में मिलीबग की छिटपुट आबादी भी दर्ज की गई। अधिकांश कपास के खेतों में, हरे गुलरों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप अधिक है। गुलाबी सूँडी की संख्या ट्रैप में भी बहुत अधिक थीं। गुलरों का सड़ना और खराब खुले गुलरों को भी देखा गया। कुछ खेतों में कपास की पत्ती मोड़ने वाली वायरल बीमारी (कॉटन लीफ कर्ल वायरस रोग), सूटी मोल्ड देखी गई जबकि कई खेतों में मायरोथेसियम/ फंगल पत्ती धब्बा देखा गया।

सिरसा में, 144-159 दिनों के पश्चात फसल बीजकोष बनने और बीजकोष खुलने की अवस्था में है। मौसम गर्म, धूप और उमस भरा था। सिंचाई और आवश्यकता आधारित कीटनाशक छिड़काव का कार्य प्रगति पर है। कुछ खेतों में कपास की पहली चुनाई पूरी कर ली गई है और दूसरी चुनाई प्रगति पर है । मक्खी और जैसिड की आबादी ईटीएल को पार कर गई और कीटों की संख्या क्रमशः 03-31 और 00-05 / 3 पत्तियों के बीच है। कुछ स्थानों पर सफेद हरे गुलरों की क्षति (40-90% के बीच)के आधार पर सभी स्थानों पर गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल को पार कर गई। सभी स्थानों पर बोल सड़न की घटनाएं देखी गई।

परामर्श:

हिसार में, चूंकि मौसम अनुकूल है, इसलिए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे तेज धूप के दौरान कपास की चुनाई शुरू करें। कपास की फसल में एक तिहाई गूलर खुल जाने पर सिंचाई न करें। यदि संभव हो तो गुलाबी सूँडी से संक्रमित कपास को अलग से चुनें और संग्रहित करें। देर से बोई गई कपास की फसल में गुलाबी सूँडी संक्रमण के खिलाफ प्रबंधन के उपाय करें। यदि गुलाबी सूँडी का संक्रमण ईटीएल पार कर जाता है, तो साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @200 मिली/एकड़ या फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 – 400 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या अल्फासाइपरमेथ्रिन 10 ईसी @100 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। संबंधित बॉल सड़न को नियंत्रित करने के लिए, कार्बेन्डाजिम 12%+मैन्कोजेब 63% डबल्यूपी @30 ग्राम या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @6 ग्राम या एज़ोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% w/w +डिफ़ेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिरम 55%+पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @20 ग्राम/10 लीटर पानी का छिड़काव करने का सुझाव दिया जाता है। मायरोथेशियम लीफ स्पॉट, कोरिनेस्पोरा, अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट जैसे पर्ण रोगों के प्रबंधन के लिए प्रोपीकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% W/W+ डिफ़ेनोकोनाज़ोल 11.4% W/W एससी @10 मिली या मेटिराम 55%+पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @20 ग्राम/10 लीटर पानी का पत्तियों पर छिड़काव करें। कम से कम साप्ताहिक अंतराल पर नियमित रूप से खेतों की निगरानी करें। सूटी मोल्ड के विकास के मामले में, 15 दिनों के अंतराल पर प्रोपीकोनाज़ोल 25 ईसी @ 1 मिली/लीटर पानी या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी @ 2.5 ग्राम/लीटर पानी के 2-3 रोगनिरोधी/चिकित्सीय छिड़काव करें।

सिरसा में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे नियमित रूप से कीट-पतंगों की घटनाओं की निगरानी करें। केवल सफेद मक्खी की वयस्क आबादी को प्रबंधित करने के लिए, डायफेंथियुरोन 50% डबल्यूपी 200 ग्राम को या एथियन @ 800 मिलीलीटर/एकड़ को 150-200 लीटर पानी में डालकर छिड़काव करें। सूटी फफूंद के विकास के मामले में, प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @1 मिली/लीटर या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी @2.5 ग्राम/लीटर पानी के 3 रोगनिरोधी/चिकित्सीय छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर दें। यदि गुलाबी सूँडी, हरे गूलर क्षति के आधार पर ईटीएल को पार कर जाता है, तो साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या

साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @200 मिली/एकड़ या फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 – 400 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या अल्फासाइपरमेथ्रिन 10 ईसी @120 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। बॉल सड़न को नियंत्रित करने के लिए, कार्बेन्डाजिम 12%+मैन्कोजेब 63% डबल्यूपी @30 ग्राम या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @6 ग्राम या एज़ोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% w/w +डिफ़ेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिरम 55%+पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @20 ग्राम/10 लीटर पानी का छिड़काव करने का सुझाव दिया जाता है। पैराविल्ट प्रबंधन के लिए, प्रभावित पौधों पर मुरझाने के लक्षण दिखाई देने के तुरंत बाद कोबाल्ट क्लोराइड @ 10 मिलीग्राम/ लीटर का छिड़काव करें, इसके बाद कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डबल्यूपी @ 2.5 ग्राम + 20 ग्राम यूरिया/लीटर पानी से पौंधे को भिगोये। पत्तों पर फंगल धब्बों के प्रबंधन के लिए कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @0.04 ग्राम या कार्बेन्डाजिम12%+मैन्कोजेब 63%@30 ग्राम या क्रेसॉक्सिम-मिथाइल 44.3% एससी @ 1 मिली/लीटर या प्रोपिकोनाज़ोल @ 1 मिली या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% एससी @ 1 मिली/लीटर या प्रोपिकोनाज़ोल @1 मिली/लीटर या पायराक्लोस्ट्रोबिन 20% एससी @ 1 मिली/लीटर या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 0.6 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करें।

कपास उत्पादन तकनीक के संबंध में विस्तृत जानकारी, जैसे कि मिट्टी, किस्मों, उर्वरक आवेदन, बुवाई के तरीकों, सिंचाई प्रणालियों, खरपतवारों, कीटों और बीमारियों के प्रबंधन आदि को भाकृअनुप -केकअनुसं, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित **सीआईसीआर कॉटन ऐप** द्वारा ली जा सकता है। ऐप को गूगल प्ले स्टोर से बिना किसी शुल्क के डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल विकास चरण विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह को भाकृअनुप -केकअनुसं की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाता है, ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श दिया जा सके ।

भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur
An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए XX (बीसवाँ) साप्ताहिक परामर्श, 3 ओक्टोबर से 9 ओक्टोबर, 2023 तक

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा(मिमी)					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर/ ओक्टोबर					ओक्टोबर				
		29	30	01	02	03	05	06	07	08	09
	अजमेर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	जोधपुर	0	4	0	0	0	0	0	0	0	0
	नागौर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	पाली	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	श्री गंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी	64.5 to 115.5 मिमी			115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा	भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में, 98 से 144 दिन के पश्चात फसल, फूल आने बीजकोष बनने और बीजकोष के विकास की अवस्था में है। अंतरकृषि क्रियाओं का संचालन किया गया है। अधिकांश खेत खरपतवार से मुक्त हैं। जैसिड की संख्या ईटीएल के ऊपर देखी गई और सफेद मक्खी अभी भी ईटीएल से नीचे है।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, 131 से 176 दिन के पश्चात फसल गूलर बनने और गूलर फूटने की अवस्था में होती है। देर से बोई गई कपास में अंतरकृषि क्रियाएँ अपनाई गई हैं। कपास की चुनाई प्रगति पर है। किसानों के खेतों में रस चूसने वाले कीटों जैसे की जैसिड और थ्रिप्स की संख्या ईटीएल से नीचे देखी गई जबकि सफेद मक्खी और गुलाबी सूँडी का प्रकोप ईटीएल को पार कर गया है।

परामर्श:

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में, किसानों को सलाह दी जाती है वह रस चूसने वाले कीटों के संक्रमण की निगरानी करें इसे नियंत्रित करने के लिए फ्लोनिकैमिड 50 डब्लूजी @ 80 ग्राम या डिनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 60 ग्राम या थियामेथोक्सम 25 डब्लूजी @ 40 ग्राम या डायफेंथियुरोन 50% डब्लूपी @ 200 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें। सफेद मक्खी और जैसिड की निगरानी के लिए 8/एकड़ की दर से पीले चिपचिपे जाल लगाएं और गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2/एकड़ की दर से फेरोमोन जाल लगाएं और बताई गई वैधता के अनुसार लुयर बदलें। नियमित रूप से गुलाबी सुंडी की उपस्थिति की निगरानी करें और प्रभावित फूलों (रोसेट फूल) को नष्ट कर दें। गुलाबी सुंडी के लिए, संक्रमण के स्तर को देखने के लिए प्रति एकड़ 20 हरे बीजकोषों का निरीक्षण करें। यदि गुलाबी सूँडी फेरोमोन जाल में फंसने या हरे बोल क्षति के आधार पर ईटीएल को पार कर जाता है, तो इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिलीलीटर या क्लोरपाइरीफोस 20% ईसी @ 500 मिलीलीटर या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी @ 200 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें। एक ही कीटनाशक को दोबारा न दोहराएं और जब भी दुबारा छिड़काव की आवश्यकता हो तो , कीटनाशक को बारी-बारी से प्रयोग करें। यदि पौधों की पत्तियाँ अचानक गिरती हैं जो अंततः मुरझा (पैराविल्ट) जाती हैं, तो प्रभावित पौधों को कोबाल्ट क्लोराइड @ 10 मिलीग्राम/10 लीटर पानी का छिड़काव करें या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डबल्यूपी @2.5 ग्राम/ लीटर पानी में या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @12 ग्राम + यूरिया 100 ग्राम/10 लीटर पानी में इन लक्षणों के दिखने के तुरंत बाद पौधों को भिगोकर बचाएं। मायरोथेसियम, कोरिनेस्पोरा, अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट, गूलर सड़न रोग और आर्द्र मौसम ब्लाइट जैसे पर्ण रोगों के मामले में, प्रोपीकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 4 ग्राम या या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिरम 55% + पायराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @ 20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का पर्णीय छिड़काव करें। जड़ सड़न से प्रभावित पौधों और आसपास के स्वस्थ पौधों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 1.2 ग्राम/लीटर पानी या ट्राइकोडर्मा हार्ज़ियानम या टी. विरिडी डब्ल्यूपी फॉर्मूलेशन @ 5 - 6 ग्राम/लीटर पानी से भिगोएँ। एक ही कीटनाशक/कवकनाशी और एक ही समूह के कीटनाशक/कवकनाशी को दोबारा न दोहराएं। दो या अधिक कीटनाशकों के टैंक मिश्रण से बचें।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कीटों और बीमारियों के लिए फसल की नियमित निगरानी

करें। यदि सफेद मक्खी की संख्या ईटीएल को पार कर जाती है तो नियंत्रण के लिए एफिडोपाइरोपेन 50 डीसी @ 400 मिली/एकड़ या पाइरिप्रोक्सीफेन 10 ईसी @ 500 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। गुलाबी इल्ली की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन ट्रैप लगाएं। नियमित रूप से गुलाबी सूँडी की उपस्थिति की निगरानी करें और जहां भी गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल (हरे बीजकोषों में 5-10% से अधिक संक्रमण) को पार कर जाती है तो साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @200 मिली/एकड़ या फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 – 400 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या अल्फासाइपरमेथ्रिन 10 ईसी @120 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। एक ही कीटनाशक का प्रयोग लगातार नहीं करना चाहिए तथा आवश्यकता आधारित छिड़काव को पिछले छिड़काव के 12-15 दिन बाद करना चाहिए।

कपास उत्पादन तकनीक के संबंध में विस्तृत जानकारी, जैसे कि मिट्टी, किस्मों, उर्वरक आवेदन, बुवाई के तरीकों, सिंचाई प्रणालियों, खरपतवारों, कीटों और बीमारियों के प्रबंधन आदि को भाकृअनुप -केकअनुसं, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित **सीआईसीआर कॉटन ऐप** द्वारा ली जा सकता है। ऐप को गूगल प्ले स्टोर से बिना किसी शुल्क के डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल विकास चरण विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह को भाकृअनुप -केकअनुसं की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाता है, ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श दिया जा सके ।

भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए XX (बीसवाँ) साप्ताहिक परामर्श, 3 ओक्टोबर से 9 ओक्टोबर, 2023 तक

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा(मिमी)					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर/ ओक्टोबर					ओक्टोबर				
		29	30	01	02	03	05	06	07	08	09
	खरगाँव										
	धार	19.7	0.2	0	0	0	0	0	0	0	0
	खांडवा										
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में, फसल 98 से 147 दिन के पश्चात फूल आने और बीजकोष बनने की अवस्था में है। निराई-गुड़ाई, अंतरकृषि क्रियाएँ, सिंचाई, उर्वरक और कीटनाशकों का प्रयोग फसल के चरणों के अनुसार किया गया है। खेत फिलैन्थस निरुरी, कैमेलिन एसेसिलिस, डिगेरा अर्वेन्सिस, यूफोरबिया प्रजाति सिनोडोन डैक्टिलॉन, साइपरस रोटंडस, डिजिटेरियास एंगुइनैलिस और इचिनोक्लोआ प्रजाति जैसे खरपतवारों से प्रभावित हैं। कुछ इलाकों में पोटैशियम की कमी दर्ज की गई है। कुछ खेतों में बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट सर्कोस्पोरा और अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट देखे गए।

परामर्श:

किसानों को बुवाई के 120 दिन बाद 10% नाइट्रोजन डालने की सलाह दी जाती है। नाइट्रोजन की विभाजित खुराकें कॉलम विधि द्वारा 10 से 15 सेमी की गहराई पर डालनी चाहिए। यदि खेतों में अचानक सूखने या पैराविल्ट के लक्षण दिखाई देते हैं, तो प्रभावित पौधों के चारों ओर तुरंत कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @12 ग्राम + यूरिया 1.5% डालें। मौजूदा क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुसार खेतों में बैल से चलने वाले कोल्पा से निराई-गुड़ाई करें। गुलाबी सूँडी की गतिविधि की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन जाल स्थापित करें। रोसेट फूलों की उपस्थिति का निरीक्षण करें और उन्हें इकट्ठा करके तुरंत नष्ट कर दें। यदि गुलाबी सूँडी ईटीएल से अधिक हो तो प्रोफेनोफोस 50 ईसी @ 600 मिली/एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी @ 200 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। जहां फसल की अवस्था 120 दिन की हो, वहां साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @200 मिली/एकड़ या फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 – 400 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या अल्फासाइपरमेथ्रिन 10 ईसी @120 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। बैक्टीरियल ब्लाइट रोग के प्रबंधन के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी/डब्ल्यूजी @25-30 ग्राम/10 लीटर पानी का छिड़काव करें। कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डबल्यूपी @30 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @4 ग्राम या क्रेसोक्सिम मिथाइल 44.3 एससी @ 10 मिली या प्रोपीनेब 70 डबल्यूपी @25 ग्राम या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या मेटिरम 55% +पाइराक्लोस्ट्रोबिन5% डबल्यूजी @20 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम को 10 लीटर पानी में मिलाएं एवं सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा, मायरोथेसियम लीफ स्पॉट, कोरिनेप्सोरा पत्ती धब्बा, अन्य फफूंद पत्ती धब्बों और फफूंद बोल सड़न रोगो के खिलाफ खेतो में पत्तियों पर छिड़काव करें।

कपास उत्पादन तकनीक के संबंध में विस्तृत जानकारी, जैसे कि मिट्टी, किस्मों, उर्वरक आवेदन, बुवाई के तरीकों, सिंचाई प्रणालियों, खरपतवारों, कीटों और बीमारियों के प्रबंधन आदि को भाकृअनुप -केकअनुसं, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित **सीआईसीआर कॉटन ऐप** द्वारा ली जा सकता है। ऐप को गूगल प्ले स्टोर से बिना किसी शुल्क के डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल विकास चरण विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह को भाकृअनुप -केकअनुसं की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाता है, ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श दिया जा सके ।